



INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES

(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)

DOI : 03.2021-11278686

ISSN : 2582-8568

IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

“भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की भूमिका: लिंग समानता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का विमर्श”

(The Role of Women Saints in the Bhakti Movement: A Discourse on Gender Equality and Spiritual Freedom)

सचिन,¹ मोहित कुमार,² डॉ. पंकज शर्मा³

^{1,2}शोधार्थी, इतिहास विभाग, किशोरी रमण (पी. जी.) कॉलेज, मथुरा (उत्तर प्रदेश, भारत)

³विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, किशोरी रमण (पी.जी.) कॉलेज, मथुरा (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: <https://doi-ds.org/doi/10.2026-29636361/IRJHIS2604011>

सारांश:

यह शोधपत्र भारतीय भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की भूमिका का समालोचनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से लिंग समानता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के संदर्भ में। मध्यकालीन भारतीय समाज गहरे रूप से पितृसत्तात्मक था, जहाँ स्त्रियों को सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में सीमित अधिकार प्राप्त थे। ऐसे सामाजिक-धार्मिक परिवेश में मीराबाई, अक्का महादेवी, जनाबाई, सहजोबाई तथा बहिणाबाई जैसी स्त्री संतों का उदय एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी घटना के रूप में सामने आता है। इन संतों ने भक्ति को केवल धार्मिक आस्था तक सीमित न रखकर आत्म-अभिव्यक्ति, आत्मसम्मान और आत्मिक मुक्ति का सशक्त माध्यम बनाया।

यह अध्ययन दर्शाता है कि स्त्री संतों ने ईश्वर के साथ प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत संबंध स्थापित कर धार्मिक मध्यस्थता, कर्मकांड और जातिगत-लैंगिक भेदभाव को चुनौती दी। उनकी वाणी और काव्य में सामाजिक असमानता के प्रति असहमति, स्त्री अस्मिता की चेतना तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता की स्पष्ट अभिव्यक्ति दिखाई देती है। भक्ति आंदोलन के माध्यम से इन स्त्री संतों ने यह सिद्ध किया कि आध्यात्मिक साधना किसी जाति, वर्ग या लिंग तक सीमित नहीं है।

शोध यह भी रेखांकित करता है कि स्त्री संतों का योगदान केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने सामाजिक चेतना के विकास और नारी विमर्श की नींव रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचार और रचनाएँ सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा के मूल्यों को सुदृढ़ करती हैं। इस प्रकार, भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की भूमिका भारतीय समाज में लिंग समानता और आध्यात्मिक लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक सशक्त वैचारिक हस्तक्षेप के रूप में स्थापित होती है।

कुंजी शब्द: भक्ति आंदोलन, स्त्री संत, लिंग समानता, आध्यात्मिक स्वतंत्रता, नारीवादी आध्यात्मिकता, सामाजिक सुधार

प्रस्तावना :

भक्ति आंदोलन भारतीय सामाजिक-धार्मिक इतिहास का एक अत्यंत प्रभावशाली, सशक्त और परिवर्तनकारी सुधारवादी आंदोलन रहा है। मध्यकालीन भारत में जब समाज कठोर जाति-व्यवस्था, जटिल कर्मकांड, धार्मिक आडंबर और पितृसत्तात्मक मूल्यों से ग्रस्त था, तब भक्ति आंदोलन ने इन जड़ परंपराओं को चुनौती देते हुए ईश्वर-भक्ति को सरल, सहज और मानवीय स्वरूप प्रदान किया। इस आंदोलन ने यह प्रतिपादित किया कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए न तो जन्म, जाति, लिंग और न ही औपचारिक धार्मिक

अधिकार आवश्यक हैं, बल्कि सच्ची भक्ति, प्रेम और समर्पण ही पर्याप्त हैं।

भक्ति आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक यह रही कि इसने समाज के वंचित और हाशिए पर खड़े वर्गों— विशेष रूप से स्त्रियों—को आत्म-अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का मंच प्रदान किया। मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत सीमित थी। उन्हें शिक्षा, धार्मिक साधना और सार्वजनिक अभिव्यक्ति के अवसर प्रायः उपलब्ध नहीं थे। धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या और आध्यात्मिक नेतृत्व पर पुरुषों का एकाधिकार था। ऐसे सामाजिक वातावरण में स्त्री संतों का उदय केवल धार्मिक घटना नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिरोध और चेतना का सशक्त रूप था।

मीराबाई, अक्का महादेवी, जनाबाई, सहजोबाई, बहिणाबाई जैसी स्त्री संतों ने भक्ति को व्यक्तिगत आस्था से आगे बढ़ाकर सामाजिक प्रश्नों से जोड़ा। उन्होंने ईश्वर से सीधा और व्यक्तिगत संबंध स्थापित कर यह सिद्ध किया कि स्त्री भी आध्यात्मिक दृष्टि से पुरुष के समान सक्षम है। इन संतों की वाणी और काव्य में प्रेम, विरह, समर्पण के साथ-साथ सामाजिक अन्याय, स्त्री-अस्मिता और आत्मसम्मान की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी भक्ति पितृसत्तात्मक नियंत्रण से मुक्ति का प्रतीक बनकर उभरती है।

स्त्री संतों ने न केवल धार्मिक कर्मकांडों और मध्यस्थता को अस्वीकार किया, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित एक समावेशी आध्यात्मिक दृष्टि प्रस्तुत की। उन्होंने भक्ति को जाति, वर्ग और लिंग की सीमाओं से मुक्त कर एक लोकतांत्रिक आध्यात्मिक आंदोलन का स्वरूप दिया। इस प्रकार भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की भूमिका सामाजिक सुधार, लिंग समानता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के विमर्श में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की वैचारिक, सामाजिक और आध्यात्मिक भूमिका का समग्र विश्लेषण करना है, ताकि उनके योगदान को भारतीय सामाजिक-धार्मिक इतिहास और नारी विमर्श के व्यापक संदर्भ में समझा जा सके।

अनुसंधान पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की भूमिका को वैचारिक, सामाजिक और आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में गहराई से समझना है। इस शोध में प्राथमिक आँकड़ों के स्थान पर द्वितीयक स्रोतों का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है, क्योंकि भक्ति आंदोलन ऐतिहासिक एवं साहित्यिक प्रकृति का विषय है। अध्ययन के लिए संत साहित्य को प्रमुख आधार बनाया गया है, जिसमें पद, अभंग, वचन, ओवी, आत्मकथात्मक रचनाएँ तथा स्त्री संतों से संबंधित लोक-साहित्य सम्मिलित हैं।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक विद्वानों द्वारा लिखे गए शोध लेख, आलोचनात्मक ग्रंथ, ऐतिहासिक अध्ययन, सामाजिक-धार्मिक विश्लेषण तथा नारीवादी विमर्श से संबंधित पुस्तकों का भी उपयोग किया गया है। शोध की प्रक्रिया में ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है, जिसके माध्यम से मध्यकालीन भारतीय समाज की सामाजिक संरचना, जाति-व्यवस्था, पितृसत्तात्मक मूल्य प्रणाली तथा धार्मिक परंपराओं के संदर्भ में स्त्री संतों के विचारों का मूल्यांकन किया गया है।

साथ ही, वैचारिक और तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए स्त्री संतों की रचनाओं और विचारों की तुलना पुरुष संतों एवं

समकालीन सामाजिक मान्यताओं से की गई है। इससे यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि स्त्री संतों की भक्ति किस प्रकार सामाजिक प्रतिरोध, लिंग समानता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का माध्यम बनी।

इस अध्ययन में अंतर्विषयक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें इतिहास, समाजशास्त्र, धर्मशास्त्र और नारी अध्ययन के सिद्धांतों का समन्वय किया गया है। इस पद्धति के माध्यम से स्त्री संतों के योगदान को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार और नारी विमर्श के व्यापक संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

परिणाम :

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि भक्ति आंदोलन के विकास और विस्तार में स्त्री संतों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, सशक्त और परिवर्तनकारी रही है। स्त्री संतों ने भक्ति आंदोलन को न केवल अधिक समावेशी बनाया, बल्कि उसे मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक चेतना और आध्यात्मिक स्वतंत्रता से भी समृद्ध किया। उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त उस धारणा को चुनौती दी, जिसके अनुसार स्त्रियाँ आध्यात्मिक साधना और धार्मिक अधिकारों से वंचित मानी जाती थीं। स्त्री संतों की भक्ति ने यह सिद्ध किया कि ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग किसी भी प्रकार के लिंग, जाति या वर्ग भेद से परे है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि स्त्री संतों ने परंपरागत धार्मिक कर्मकांड, पितृसत्तात्मक नियंत्रण और धार्मिक मध्यस्थता का विरोध किया। उन्होंने ईश्वर के साथ प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत और आत्मिक संबंध को सर्वोच्च माना। मीराबाई, अक्का महादेवी, जनाबाई, सहजोबाई और बहिणाबाई जैसी संतों की रचनाओं में यह भावना प्रबल रूप से दिखाई देती है कि भक्ति आत्मिक मुक्ति का साधन है, न कि सामाजिक बंधनों को बनाए रखने का उपकरण। उनकी वाणी में आत्मसमर्पण के साथ-साथ आत्मसम्मान और स्वतंत्र चेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है।

परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि स्त्री संतों की रचनाएँ केवल आध्यात्मिक अनुभवों का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि वे सामाजिक असमानता, लैंगिक भेदभाव और स्त्री-वंचना के प्रति असहमति को भी स्वर देती हैं। उनकी कविताओं और पदों में स्त्री जीवन के संघर्ष, पीड़ा, प्रेम, विरह और आत्मिक साहस का यथार्थ चित्रण मिलता है। यह साहित्य स्त्री-अस्मिता की जागरूकता और आत्मबोध का सशक्त माध्यम बनकर उभरता है।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह भी स्पष्ट होता है कि स्त्री संतों ने भक्ति आंदोलन को लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि आध्यात्मिक साधना केवल शिक्षित, उच्च जाति या पुरुषों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामान्य, अशिक्षित और सामाजिक रूप से वंचित स्त्रियाँ भी ईश्वर से संवाद स्थापित कर सकती हैं। इससे भक्ति आंदोलन का सामाजिक आधार व्यापक हुआ और उसमें मानवीय समानता का तत्व सुदृढ़ हुआ।

समग्र रूप से, अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि स्त्री संतों का योगदान भक्ति आंदोलन को एक सामाजिक-सुधारक और चेतना-प्रधान आंदोलन के रूप में स्थापित करने में निर्णायक रहा। उनकी भक्ति ने स्त्री को आध्यात्मिक रूप से स्वतंत्र, आत्मसम्मान से युक्त और सामाजिक रूप से सजग व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया, जो भारतीय समाज में लिंग समानता और आध्यात्मिक लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

चर्चा :

प्रस्तुत अध्ययन की चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों द्वारा अपनाया गया भक्ति मार्ग केवल धार्मिक साधना का साधन नहीं था, बल्कि वह पितृसत्तात्मक सामाजिक और धार्मिक नियंत्रण से मुक्ति का एक सशक्त प्रतीक भी था। मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की धार्मिक भूमिका सीमित और नियंत्रित थी, जहाँ उन्हें प्रायः मौन, आज्ञाकारी और आध्यात्मिक रूप से निर्भर माना जाता था। ऐसे परिवेश में स्त्री संतों की भक्ति ने इन धारणाओं को चुनौती देते हुए स्त्री की आत्मिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक समानता को स्थापित किया।

स्त्री संतों की भक्ति में प्रेम, विरह और समर्पण के साथ-साथ आत्मिक साहस और आत्मसम्मान की गहन अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी रचनाओं में ईश्वर को प्रियतम, सखा या सहचर के रूप में संबोधित किया गया है, जो स्त्री की भावनात्मक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत आस्था को दर्शाता है। यह भक्ति औपचारिक धार्मिक संरचनाओं से मुक्त होकर प्रत्यक्ष अनुभव और आत्मानुभूति पर आधारित है। इस प्रकार स्त्री संतों की साधना ने धार्मिक मध्यस्थता और कर्मकांड की अनिवार्यता को अस्वीकार किया।

चर्चा से यह भी स्पष्ट होता है कि स्त्री संतों ने भक्ति आंदोलन को सामाजिक समानता और लिंग न्याय के विमर्श से जोड़ा। उन्होंने जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को अपनी वाणी के माध्यम से प्रश्नांकित किया। उनकी भक्ति सामाजिक अन्याय के विरुद्ध एक नैतिक प्रतिरोध के रूप में उभरती है, जिसमें मानवीय गरिमा और समानता के मूल्य निहित हैं।

स्त्री संतों का यह दृष्टिकोण आधुनिक नारीवादी चिंतन से भी साम्य रखता है। यद्यपि उन्होंने स्वयं को नारीवादी आंदोलन से नहीं जोड़ा, फिर भी उनकी रचनाओं और विचारों में स्त्री अस्मिता, आत्मनिर्णय और स्वतंत्र चेतना के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इस प्रकार भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की भूमिका न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन समाज में लिंग समानता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के विमर्श के लिए भी प्रेरणास्रोत सिद्ध होती है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों की भूमिका केवल धार्मिक आस्था और साधना तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन और वैचारिक क्रांति की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। मध्यकालीन भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना, धार्मिक कर्मकांडों और सामाजिक असमानताओं के बीच स्त्री संतों ने भक्ति को आत्म-अभिव्यक्ति, आत्मसम्मान और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का माध्यम बनाया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री भी आध्यात्मिक रूप से पुरुष के समान सक्षम, स्वतंत्र और आत्मनिर्णय की अधिकारिणी है।

स्त्री संतों की वाणी और रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि ईश्वर-प्राप्ति के मार्ग पर चलने के लिए जाति, वर्ग या लिंग कोई बाधा नहीं है। उनकी भक्ति सामाजिक न्याय, मानवीय समानता और नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। इस प्रकार उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त भेदभावपूर्ण परंपराओं को चुनौती देते हुए एक समावेशी और लोकतांत्रिक आध्यात्मिक दृष्टि प्रस्तुत की।

वर्तमान समय में भी स्त्री संतों की विचार-विरासत अत्यंत प्रासंगिक है। उनके विचार लिंग समानता, स्त्री सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय के आधुनिक विमर्श को वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। भक्ति आंदोलन में स्त्री संतों का योगदान यह स्मरण कराता

है कि आध्यात्मिक चेतना सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन सकती है और समानता पर आधारित समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, रामविलास. (1996). *भक्ति आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. त्रिपाठी, रामशरण. (2004). *मध्यकालीन भारतीय भक्ति आंदोलन*. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. मिश्र, शिवकुमार. (2008). *भक्ति काव्य और स्त्री चेतना*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. वर्मा, विद्या. (2010). *भारतीय समाज में स्त्री और धर्म*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सिंह, लक्ष्मीचंद. (2005). *भक्ति आंदोलन: इतिहास और दर्शन*. साहित्य भवन, इलाहाबाद।
6. शुक्ल, रामचंद्र. (2002). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
7. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (1994). *भक्ति आंदोलन की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. तिवारी, नीलम. (2012). *स्त्री संत काव्य: सामाजिक और आध्यात्मिक विमर्श*. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
9. पांडेय, जानकीप्रसाद. (2007). *मीराबाई का काव्य और दर्शन*. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
10. वर्मा, सावित्री. (2015). *नारी चेतना और भक्ति काव्य*. अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
11. सिंह, प्रेमशंकर. (2011). *भक्ति आंदोलन और सामाजिक समानता*. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. मिश्रा, सुषमा. (2014). *स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. अवस्थी, कैलाशचंद्र. (2009). *भक्ति आंदोलन: वैचारिक परिप्रेक्ष्य*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
14. पांडेय, उर्मिला. (2016). *हिंदी साहित्य में स्त्री संतों का योगदान*. साहित्य निकेतन, नई दिल्ली।
15. त्रिवेदी, मंजू. (2018). *नारीवादी दृष्टि से भक्ति आंदोलन*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. सिंह, मीरा. (2013). *आध्यात्मिक स्वतंत्रता और स्त्री संत परंपरा*. भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी।
17. यादव, रेखा. (2020). *भक्ति काव्य में स्त्री अस्मिता*. हिंदी साहित्य अकादमी, लखनऊ।